कारके इति— 'कारके' यह अधिकार सूत्र है।
'कारके' इस सुत्र का यहाँ अपने स्थान पर कोई (पूर्ण) अर्थ नहीं, ~~आगे आने वाले प्रत्येक सुत्र में~~ अग्रिम सूत्रों के साथ मिल कर यह अर्थबोध कराता है।
आगे आने वाले प्रत्येक सुत्र में 'कारके' यह पद उपस्थित होता है।
कारके सुत्र को लेकर ही आगे आने वाले सूत्रों का अर्थ पुरा होता है।
सप्तम्यन्त होने से कारक पद के अर्थ का अनुवाद किया गया है, सप्तमी निर्धारण अर्थ में है, अतः 'कारकेषु मध्ये, कारकों में' ऐसा अर्थ इसका होता है।
कारके - यह एक वचनान्त पद है।
यहाँ एकवचन 'जाति' अर्थ को लेकर हुआ है, जाति अनेक में रहने वाला धर्म होता है। इसलिए अनेकता की साक्षात् प्रतीति न होने पर भी प्रतीति हो जाती है। अतः कारके का अर्थ 'कारकेषु मध्ये' किया गया है।
भाष्यकार ने कारक संज्ञा को पुर्वसिद्ध नहीं माना है, उन्होंने 'कारके' इस सप्तमी को प्रथमा के अर्थ में मानकर अर्थ किया है 'कारकम्'।
इस मत के अनुसार आगे आने वाले प्रत्येक सुत्र में उपस्थित होकर यह 'कारके' पद प्रथमान्त बनकर वाक्य भेद से अन्वित होता है।

Scanned by CamScanner

'कारक' संज्ञा अन्वर्थ संज्ञा है - अर्थ का अनुसरण करने वाली है।

कारक पद का अर्थ है - करोतीति कारकम्।
अर्थात् जो क्रिया को करता है अथवा क्रिया के साथ जिसका अन्वय होता है।

इस प्रकार अर्थ के अनुकूल 'कारक' नाम होने से 'ब्राह्मणस्य पुत्रं पन्थानं पृच्छति - ब्राह्मण के पुत्र से रास्ता पूछता है' - इस वाक्य में क्रिया को करने वाला न होने से अथवा क्रिया से सम्बन्ध न होने से 'ब्राह्मण' कारक नहीं।

ब्राह्मण यहाँ पुत्र का विशेषण है, पुत्र से सम्बन्ध अवश्य रखता है, पर वाक्य में आई हुई प्रश्न क्रिया को न वह करता है और न उसका सम्बन्ध (अन्वय) ही है, प्रश्न क्रिया का सम्पादन करने वाला पुत्र है, ब्राह्मण नहीं, वह तो यहाँ अन्यथा सिद्ध है।

Scanned by CamScanner

कुछ लोगों ने 'कारक' इस अधिकृत पद का अर्थ 'क्रिया' ही किया है, 'करोति कर्मादिव्यपदेशम' अर्थात् जो कर्म आदि संज्ञाओं को करता है - उसे कारक कहते हैं।
कर्म आदि संज्ञाओं को करने वाली क्रिया ही है।
जब कर्म आदि का क्रिया के साथ सम्बन्ध होगा तभी उनकी कर्म आदि संज्ञा हो सकेगी - अन्यथा नहीं।

कारक विभक्ति — कर्म आदि कारक अर्थ में होने वाली विभक्तियों को कारक विभक्ति कहा जाता है

उपपद विभक्ति — उन्हें कहा जाता है जो किसी पद के योग में आती हैं।

सभी विभक्तियाँ दो दो प्रकार की हैं —
कारक विभक्ति — उपपद विभक्ति

Scanned by CamScanner

'कारके' पद प्रथमान्त बन कर वाक्य भेद से अन्वित होता है — 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' इसके दो वाक्य बन जाते हैं।

कर्तुरीप्सिततमं कारकं — कर्ता क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उसकी कारक संज्ञा होती है।

इस वाक्य में अधिकृत 'कारके' यह सप्तम्यन्त पद पूर्वोक्त प्रकार से प्रथमान्त बन कर विधेय बन जाता है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कारक संज्ञा पहले से सिद्ध नहीं, अपितु इसी सूत्र से की जाती है।

दूसरा वाक्य होता है 'कर्म' — इसका अर्थ किया जाता है कि उस कारक की कर्म संज्ञा होती है अर्थात् क्रिया के द्वारा कर्ता के जिस ईप्सिततम की कारक संज्ञा की गई है उसी की कर्म संज्ञा भी होती है।

इस प्रकार कारक और कर्म दोनों संज्ञाओं का समावेश हो जाता है, इन दोनों संज्ञाओं के समावेश के कारण 'कारके' पद की अनुवृत्ति है, जो सप्तम्यन्त होते हुए भी प्रथमान्त का अर्थ देता है, कारक इस नवीन संज्ञा का विधान करता है।

Scanned by CamScanner

कर्तुरीप्सिततमं कर्म

कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमं कारकं कर्म-संज्ञं स्यात्
कर्ता क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है, उस कारक की कर्म संज्ञा होती है।

इस सूत्र में 'कर्तुः', 'ईप्सिततमम्' और 'कर्म' ये तीन पद हैं, चतुर्थ पद कारके की अनुवृत्ति आती है।
कर्तुः पद षष्ठ्यन्त है और इसका सम्बन्ध 'ईप्सिततमम्' के साथ है।
'कर्तुः' में षष्ठी 'कर्तरि च वर्तमाने' इस सूत्र से अनुक्त कर्ता में आई है।
'ईप्सिततमम्' का अर्थ है - प्राप्त करने को अत्यन्त इष्ट अर्थात् जिसे प्राप्त करना अत्यन्त अधिक इष्ट हो।
प्राप्त करना भी क्रिया के द्वारा ही होना चाहिए, इसीलिए वृत्ति में कहा गया है 'कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमं' जिस क्रिया के द्वारा कर्ता अन्य को विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है, उसी क्रिया के प्रति वह अन्य पदार्थ कर्म होता है, जैसे - देवदत्तं पश्यति - देवदत्त को देखता है।

Scanned by CamScanner

इस वाक्य में दर्शन क्रिया के द्वारा कर्ता देवदत्त को विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है।

Scanned by CamScanner

अनुवृत्ति को समझने के लिए पाणिनि के सूत्रों का क्रम अष्टाध्यायी के अनुसार जान लेना चाहिए।

632 आधारोऽधिकरणम् 1/4/45

542 अभिशीङ्-स्थाऽऽसां कर्म 1/4/46

543 अभिनिविशश्च 1/4/47

544 उपान्वध्याङ्-वसः 1/4/48

- कर्तुरीप्सिततमं कर्म

इस क्रम के अनुसार प्रकृत सूत्र में पूर्व सूत्र 'अभिशीङ् स्थाऽऽसां कर्म' कर्म पद की अनुवृत्ति आ सकती है। परन्तु उक्त कर्म पद के साथ 'आधार' पद भी है जो उसमें 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से आता है इसीलिए 'अभिशीङ् —' सूत्र आधार की कर्म संज्ञा करता है। अतः जब इस सूत्र में पूर्व सूत्र से 'कर्म' पद की अनुवृत्ति आयेगी, तो कर्म पद के साथ जुड़े हुए आधार पद की भी अनुवृत्ति आयेगी, तब इस सूत्र का स्वरूप होगा 'कर्तुरीप्सिततमाधारः कर्म'।
इस स्वरूप में सूत्र का अर्थ होगा — कर्त्ता के ईप्सिततम आधार की कर्म संज्ञा होती है।

Scanned by CamScanner

ऐसी स्थिति में जिस क्रिया का आधार कर्म हो सकता होगा, उसी की कर्म संज्ञा होगी।

जेहं प्रविशति — इस वाक्य में प्रवेश क्रिया का आधार भी 'जेहं' है और क्रिया के द्वारा कर्ता का ईप्सिततम भी, अतः यहाँ 'जेहं' की कर्म संज्ञा हो जाएगी, पर जहाँ कर्म का आधार होना संभव नहीं, वहाँ कर्म संज्ञा नहीं होगी —

ओदनं भुङ्क्ते — भोजन क्रिया के द्वारा कर्ता का ईप्सिततम ओदन है, पर भोजन क्रिया का आधार नहीं, अतः यहाँ कर्म संज्ञा न हो सकेगी।

आधार की योग्यता वाला कर्म तो बहुत कम धातुओं का मिलेगा, अतः बहुत थोड़े स्थलों में कर्म संज्ञा हो सकेगी।

इस आपत्ति को दूर करने के लिए इस सूत्र में कर्म की अनुवृत्ति नहीं लाई गई, अपितु 'कर्म' पद का ग्रहण कर लिया गया। तब ईप्सिततम की ही कर्म संज्ञा हो जाती है।

Scanned by CamScanner

"क्रियाविशेषणानां कर्मत्वं नपुंसकलिङ्गता च वक्तव्या — क्रियाविशेषणों की कर्मसंज्ञा होती है और वे नपुंसक लिङ्ग होते हैं' इस वार्तिक के अनुसार 'मधुरं भाषते' - मीठा बोलता है 'इत्यादि स्थलों में मधुर आदि क्रियाविशेषणों की कर्मता और नपुंसकलिङ्गता समझनी चाहिए।

मधुरं भाषते - भाषण क्रिया द्वारा कर्ता का विशेष इष्ट मधुर होने से कर्मसंज्ञा पूर्वोक्त नियम से हो जायगी।

नपुंसकलिङ्गता — सामान्ये नपुंसकम् - जहाँ पुंस्त्व या स्त्रीत्व की प्रतीति न हो वहाँ (सामान्य में) नपुंसक लिङ्ग होता है।

क्रियाविशेषण के अर्थ में न तो पुंस्त्व की और न स्त्रीत्व की ही प्रतीति होती है, अतः सामान्य होने से उसमें नपुंसकता स्वतः सिद्ध हो जायगी।

'कर्म' आदि कारक अर्थ हैं, उनकी प्रतीति अन्य से भी हो सकती है। जब अन्य किसी के द्वारा उनकी प्रतीति नहीं होगी अर्थात् यह कर्म है, यह करण है, इत्यादि रूप से 'कर्म' आदि का जब स्पष्ट कथन न हो, तब द्वितीया आदि के द्वारा उनको बताया जाता है। द्वितीया आदि विभक्तियाँ कर्मकारक आदि अर्थों के चिह्न हैं, प्रकाशक हैं, विभक्ति रूप चिह्नों से कर्मकारक आदि अर्थों को प्रकट किया जाता है।

Scanned by CamScanner

अध्ययन सामग्री

बी. ए. (संस्कृत) पार्ट 1

प्रश्नपत्र - द्वितीय

डॉ० मालविका तिवारी

सहायक प्राध्यापक

संस्कृत विभाग

एच. डी. जैन कॉलेज

आरा (वी.कुँ० सिं० वि०)

Scanned by CamScanner